## प्रश्नकोश

1. 'आर्य' शब्द इंगित करता है–

(a) नृजाति समूह को (b) यायावरी जन को

(c) भाषा समूह को (d) श्रेष्ठ वंश को

**I.A.S. (Pre) 1999**

**U.P.P.C.S. (Pre) 1999**

**उत्तर–(d)**

आर्य शब्द प्राचीन भारोपीय एवं प्राचीन ईरानी भाषा बोलने वालों के लिए प्रयुक्त शब्द है। वैदिक संस्कृति में आर्य शब्द श्रेष्ठ, शिष्ट अथवा सज्जन तथा नैतिक अर्थ में महाकुल, कुलीन, सभ्य, साधु, आदि के लिए प्रयुक्त हुआ है। सायणाचार्य ने अपने ऋग्भाष्य में आर्य का अर्थ विज्ञ, यज्ञ का अनुष्ठाता, विज्ञ स्तोता, आदरणीय अथवा सर्वत्र गंतव्य, उत्तम वर्ष, मनु, कर्मयुक्त और कर्मानुष्ठान से श्रेष्ठ आदि बताया है। अतः आर्य का शाब्दिक अर्थ 'श्रेष्ठ' या 'कुलीन' है।

2. क्लासिकीय संस्कृति में 'आर्य' शब्द का अर्थ है–

(a) ईश्वर में विश्वासी

(b) एक वंशानुगत जाति

(c) किसी विशेष धर्म में विश्वास रखने वाला

(d) एक उत्तम व्यक्ति

**U.P. Lower Sub. (Pre) 1998**

**उत्तर–(d)**

क्लासिकीय संस्कृति में 'आर्य' शब्द का अर्थ है–एक उत्तम व्यक्ति। आर्य शब्द भाषा सूचक है, जिसका अर्थ है– श्रेष्ठ या कुलीन।

3. सबसे पुराना वेद कौन-सा है?

(a) यजुर्वेद (b) ऋग्वेद

(c) सामवेद (d) अथर्ववेद

**U.P.P.C.S. (Pre) 1995**

**Uttarakhand P.C.S. (Pre) 2010**

**Uttarakhand U.D.A./L.D.A. (Pre) 2007**

**उत्तर–(b)**

भारतीय साहित्य में वेद चार हैं–ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद। इनमें ऋग्वेद सर्वाधिक प्राचीन माना जाता है।

4. 'त्रयी' नाम है–

(a) तीन वेदों का (b) धर्म, संघ व युद्ध का

(c) हिंदू धर्म के तीन देवताओं का (d) तीन मौसमों का

**U.P.P.S.C. (GIC) 2010**

**उत्तर–(a)**



Scanned with OKEN Scanner

ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा सामवेद को 'वेदत्रयी' या 'त्रयी' कहा जाता है।

5. किस वैदिक ग्रंथ में 'वर्ण' शब्द का सर्वप्रथम नामोल्लेख मिलता है?

(a) ऋग्वेद (b) अथर्ववेद
(c) सामवेद (d) यजुर्वेद

Uttarakhand P.C.S. (Pre) 2012

उत्तर–(a)

'वर्ण' शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है। ऋग्वेद में 'वर्ण' शब्द रंग के अर्थ में तथा कहीं-कहीं व्यवसाय-चयन के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। आर्यों को गौर वर्ण तथा दासों को कृष्ण वर्ण का कहा गया है। ऋग्वेद के दसवें मंडल के पुरुष सूक्त में सर्वप्रथम 'शूद्र' वर्ण का उल्लेख मिलता है।

6. वर्णव्यवस्था से संबंधित 'पुरुष सूक्त' मूलतः पाया जाता है–

(a) अथर्ववेद (b) सामवेद
(c) ऋग्वेद (d) मनुस्मृति
(e) इनमें से कोई नहीं

Chhattisgarh P.C.S. (Pre) 2014

उत्तर–(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. सुमेलित कीजिए–

A. अथर्ववेद 1. ईश्वर महिमा
B. ऋग्वेद 2. बलिदान विधि
C. यजुर्वेद 3. ओषधियों से संबंधित
D. सामवेद 4. संगीत

कूट :

| | A | B | C | D |
|---|---|---|---|---|
| (a) | 3 | 1 | 2 | 4 |
| (b) | 1 | 2 | 3 | 4 |
| (c) | 2 | 3 | 4 | 1 |
| (d) | 3 | 4 | 1 | 2 |

M.P.P.C.S. (Pre) 1999

उत्तर–(a)

अथर्ववेद ओषधियों से संबंधित है। ऋग्वेद में ईश्वर महिमा (देवताओं की स्तुति), यजुर्वेद में कर्मकांड (बलिदान विधि) एवं सामवेद में संगीत का विस्तृत उल्लेख है।

8. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए एवं नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर चुनिए–

| सूची-I | सूची-II |
|---|---|
| A. ऋग्वेद | 1. संगीतमय स्तोत्र |
| B. यजुर्वेद | 2. स्तोत्र एवं कर्मकांड |
| C. सामवेद | 3. तंत्र-मंत्र एवं वशीकरण |
| D. अथर्ववेद | 4. स्तोत्र एवं प्रार्थनाएं |

कूट :

| | A | B | C | D. |
|---|---|---|---|---|
| (a) | 4 | 2 | 1 | 3 |
| (b) | 3 | 2 | 4 | 1 |
| (c) | 4 | 1 | 2 | 3 |
| (d) | 2 | 3 | 1 | 4 |

U.P.P.C.S. (Pre) 2003
U.P. U.D.A./L.D.A. (Pre) 2002

उत्तर–(a)

ऋग्वेद में स्तोत्र एवं प्रार्थनाएं हैं, इसमें कुल 1028 सूक्त तथा 10552 ऋचाएं या मंत्र या श्लोक हैं। यजुर्वेद में स्तोत्र एवं कर्मकांड वर्णित हैं। सामवेद के पद गेय रूप में (संगीतमय स्तोत्र) हैं, जिनको 'उद्‌गाता' पुरोहित गाता कहा जाता था। अथर्ववेद के कुल 20 अध्यायों एवं 730 सूक्तों में तंत्र-मंत्र एवं वशीकरण के संदर्भ में साक्ष्य हैं।

9. निम्नलिखित चार वेदों में से किस एक में जादुई माया और वशीकरण का वर्णन है?

(a) ऋग्वेद (b) यजुर्वेद
(c) अथर्ववेद (d) सामवेद

Jharkhand P.C.S. (Pre) 2011

उत्तर–(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. ऋग्वेद में........ऋचाएं हैं–

(a) 1028 (b) 1017
(c) 1128 (d) 1020

Chhattisgarh P.C.S. (Pre) 2011

उत्तर–(*)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. ऋग्वेद है–

(a) स्तोत्रों का संकलन (b) कथाओं का संकलन
(c) शब्दों का संकलन (d) युद्ध का ग्रंथ

U.P.R.O/A.R.O. (Pre) 2016

उत्तर–(a)



Scanned with OKEN Scanner

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

**12. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित करें एवं निम्न दिए हुए कूट में से सही उत्तर का चयन करें :**

| सूची-I | सूची-II |
|---|---|
| (A) ऋग्वेद | (i) गोपथ |
| (B) सामवेद | (ii) शतपथ |
| (C) अथर्ववेद | (iii) ऐतरेय |
| (D) यजुर्वेद | (iv) पंचविंश |

कूट :

(a) (A)-(iv), (B)-(ii), (C)-(iii), (D)-(i)
(b) (A)-(ii), (B)-(iv), (C)-(iii), (D)-(i)
(c) (A)-(iii), (B)-(iv), (C)-(i), (D)-(ii)
(d) (A)-(i), (B)-(ii), (C)-(iv), (D)-(iii)

**R.A.S./R.T.S. (Pre) 2013**

**उत्तर—(c)**

सही सुमेलन इस प्रकार है—

| | | |
|---|---|---|
| ऋग्वेद | – | ऐतरेय |
| सामवेद | – | पंचविंश |
| अथर्ववेद | – | गोपथ |
| यजुर्वेद | – | शतपथ |

**13. निम्नलिखित में से कौन-सा ब्राह्मण ग्रंथ ऋग्वेद से संबंधित है?**

(a) ऐतरेय ब्राह्मण (b) गोपथ ब्राह्मण
(c) शतपथ ब्राह्मण (d) तैत्तिरीय ब्राह्मण

**M.P.P.C.S. (Pre) 2017**

**उत्तर—(a)**

ब्राह्मण ग्रंथ यज्ञों तथा उनके अनुष्ठान के विधि-विधानों के संबंध में जानकारी देते हैं। ऐतरेय ब्राह्मण तथा कौषीतकी (शंखायन) ब्राह्मण ऋग्वेद से, पंचविंश या ताण्ड्य ब्राह्मण तथा जैमिनीय ब्राह्मण सामवेद से, शतपथ ब्राह्मण यजुर्वेद से, जबकि गोपथ ब्राह्मण अथर्ववेद से संबद्ध है।

**14. 'गोपथ ब्राह्मण' संबंधित है—**

(a) यजुर्वेद से (b) ऋग्वेद से
(c) अथर्ववेद से (d) सामवेद से

**U.P.R.O./A.R.O. (Pre) 2014**

**उत्तर—(c)**

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

**15. निम्नलिखित में से कौन शुक्ल यजुर्वेद की संहिता है?**

(a) वाजसनेयी (b) मैत्रायणी
(c) तैत्तरीय (d) काठक

**U.P.P.C.S. (Pre) 2018**

**उत्तर—(a)**

शुक्ल यजुर्वेद की संहिता 'वाजसनेयी संहिता' है। शुक्ल यजुर्वेद की दो शाखाएं कण्व तथा माध्यन्दिन हैं। ध्यातव्य है कि वाजसनेयी संहिता पूर्णतः पद्य शैली में रचित है। इसमें गद्य का प्रयोग नहीं है।

**16. ऋग्वेद का कौन-सा मंडल पूर्णतः 'सोम' को समर्पित है?**

(a) सातवां मंडल (b) आठवां मंडल
(c) नौवां मंडल (d) दसवां मंडल

**42nd B.P.S.C. (Pre) 1997**

**उत्तर—(c)**

ऋग्वेद में कुल 10 मंडल हैं। इसके नौवें मंडल के सभी 114 सूक्त 'सोम' को समर्पित हैं।

**17. ऋग्वेद संहिता का नौवां मंडल पूर्णतः किसको समर्पित है?**

(a) इंद्र और उनका हाथी
(b) उर्वशी एवं स्वर्ग
(c) पौधों और जड़ी-बूटियों से संबंधित देवतागण
(d) सोम और इस पेय पर नामाकृत देवता

**40th B.P.S.C. (Pre) 1995**

**उत्तर—(d)**

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

**18. 'यज्ञ' संबंधी विधि-विधानों का पता चलता है—**

(a) ऋग्वेद से (b) सामवेद से
(c) ब्राह्मण ग्रंथों से (d) यजुर्वेद से

**R.A.S./R.T.S. (Pre) 1999**

**उत्तर—(d)**

'यज्ञ' संबंधी विधि-विधानों का पता यजुर्वेद से चलता है। यजुर्वेद के दो भाग हैं—शुक्ल यजुर्वेद तथा कृष्ण यजुर्वेद।

**19. निम्नलिखित में से किसका संकलन ऋग्वेद पर आधारित है?**

(a) यजुर्वेद (b) सामवेद
(c) अथर्ववेद (d) इनमें से कोई नहीं

**U.P.P.C.S. (Pre) 1997**

**उत्तर—(b)**

सामवेद में कुल 1875 ऋचाएं हैं, जिनमें से सामान्य मत के अनुसार 75, जबकि कुछ विद्वानों के अनुसार 99 को छोड़कर शेष सभी ऋग्वेद में भी उपलब्ध हैं। अतः सामवेद का संकलन ऋग्वेद पर आधारित है।

**20. भारत के किस स्थल की खुदाई से लौह धातु के प्रचलन के प्राचीनतम प्रमाण मिले हैं?**

(a) तक्षशिला (b) अतरंजीखेड़ा
(c) कौशाम्बी (d) हस्तिनापुर

**U.P.P.C.S. (Pre) 1998**

**उत्तर—(b)**



Scanned with OKEN Scanner

अहिच्छत्र, अतरंजीखेड़ा, आलमगीरपुर, मथुरा, रोपड़, श्रावस्ती, काम्पिल्य आदि स्थलों की खुदाइयों से लौह युगीन संस्कृति के अवशेष प्राप्त हुए हैं। अतरंजीखेड़ा से लौह धातु मल तथा धातु शोधन में प्रयुक्त होने वाली भट्ठियां मिली हैं, जिनसे यह संकेत मिलता है कि यहां लौह धातु को गलाने का कार्य स्थानीय रूप से होता था।

**21. उपनिषद पुस्तकें हैं–**

(a) धर्म पर (b) योग पर

(c) विधि पर (d) दर्शन पर

**U.P.P.C.S. (Pre) 2002**

**U.P.P.C.S. (Mains) 2004**

**उत्तर–(d)**

उपनिषद दर्शन पर आधारित पुस्तकें हैं। इन्हें वेदांत भी कहा जाता है।

**22. उपनिषदों का मुख्य विषय है–**

(a) सामाजिक व्यवस्था (b) दर्शन

(c) विधि (d) राज्य

**U.P.Lower Sub. (Pre) 1998**

**उत्तर–(b)**

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

**23. निम्नलिखित में से किस एक वैदिक साहित्य में मोक्ष की चर्चा मिलती है?**

(a) ऋग्वेद (b) परवर्ती संहिताएं

(c) ब्राह्मण (d) उपनिषद

**U.P.P.C.S. (Mains) 2003**

**उत्तर–(d)**

वेदों में मोक्ष शब्द प्रयुक्त नहीं हुआ है। उपनिषदों में प्रथम बार मोक्ष की चर्चा मिलती है। यह शब्द श्वेताश्वतर उपनिषद में पहली बार आया है।

**24. अध्यात्म ज्ञान के विषय में नचिकेता और यम का संवाद किस उपनिषद में प्राप्त होता है?**

(a) बृहदारण्यक उपनिषद में

(b) छांदोग्य उपनिषद में

(c) कठोपनिषद में

(d) केन उपनिषद में

**I.A.S. (Pre) 1997**

**U.P.P.C.S. (Pre) 1999**

**U.P.U.D.A./L.D.A. (Pre) 2002**

**Uttarakhand P.C.S. (Pre) 2005**

**उत्तर–(c)**

कठोपनिषद में यम और नचिकेता का संवाद उल्लिखित है। इसमें आचार्य यम ने नचिकेता को उपदेश दिया है–''न इस आत्मा का कभी जन्म होता है और न इसकी कभी मृत्यु होती है। यह अजन्मा, नित्य तथा शाश्वत है।'' 'कठोपनिषद' कृष्ण यजुर्वेद का उपनिषद है।

**25. नचिकेता आख्यान का उल्लेख मिलता है–**

(a) अथर्ववेद में (b) शतपथ ब्राह्मण में

(c) कठोपनिषद में (d) बृहदारण्यक उपनिषद में

**U.P.P.C.S. (Mains) 2006**

**उत्तर–(c)**

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

**26. उपनिषद काल के राजा अश्वपति शासक थे–**

(a) काशी के (b) केकय के

(c) पांचाल के (d) विदेह के

**U.P.P.C.S. (Pre) 1999**

**उत्तर–(b)**

उपनिषदों में वर्णित राजाओं में–विदेह के राजा जनक, पांचाल के राजा प्रवाहणजाबालि, केकय के राजा अश्वपति और काशी के राजा अजातशत्रु प्रमुख थे।

**27. निम्नलिखित में से वैदिक साहित्य का सही क्रम कौन-सा है?**

(a) वैदिक संहिताएं, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद

(b) वैदिक संहिताएं, उपनिषद, आरण्यक, ब्राह्मण

(c) वैदिक संहिताएं, आरण्यक, ब्राह्मण, उपनिषद

(d) वैदिक संहिताएं, वेदांग, आरण्यक, स्मृतियां

**U.P.P.C.S. (Mains) 2014**

**उत्तर–(a)**

वैदिक संहिताओं का सही क्रम है–वैदिक संहिताएं, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद।

**28. आरंभिक वैदिक साहित्य में सर्वाधिक वर्णित नदी है–**

(a) सिंधु (b) शुतुद्री

(c) सरस्वती (d) गंगा

**I.A.S. (Pre) 1996**

**उत्तर–(a)**

सिंधु नदी का ऋग्वैदिक काल में सर्वाधिक महत्व था, इसी कारण इसका उल्लेख ऋग्वेद में सर्वाधिक बार हुआ है। सिंधु नदी को उसके आर्थिक महत्व के कारण 'हिरण्यायी' कहा गया है।



Scanned with OKEN Scanner

**29. वैदिक नदी अस्किनी की पहचान निम्नांकित नदियों में से किस एक के साथ की जाती है?**

(a) ब्यास (b) रावी
(c) चेनाब (d) झेलम

**U.P.P.S.C. (GIC) 2010**

**उत्तर—(c)**

वैदिक नदी अस्किनी की पहचान चेनाब (चिनाब) नदी से की गई है। अतः विकल्प (c) सही उत्तर है।

**30. ऋग्वेद में निम्नांकित किन नदियों का उल्लेख अफगानिस्तान के साथ आर्यों के संबंध का सूचक है?**

(a) अस्किनी (b) परुष्णी
(c) कुभा, क्रुमु (d) विपाशा, शुतुद्री

**U.P.C.S. (Pre) 2010**

**उत्तर—(c)**

ऋग्वेद में उल्लिखित कुभा (काबुल), क्रुमु (कुर्रम), गोमती (गोमल) एवं सुवास्तु (स्वात) नदियां अफगानिस्तान में बहती थीं। इन नदियों के उल्लेख से स्पष्ट होता है कि आर्यों का अफगानिस्तान के साथ घनिष्ठ संबंध था।

**31. वैदिक नदी कुभा का स्थान कहां निर्धारित होना चाहिए?**

(a) अफगानिस्तान में (b) चीनी तुर्किस्तान में
(c) कश्मीर में (d) पंजाब में

**U.P.P.C.S. (Pre) 1999**

**उत्तर—(a)**

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

**32. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए :**

| सूची-I (वैदिक नदियां) | सूची-II (आधुनिक नाम) |
|---|---|
| A. कुभा | 1. गंडक |
| B. परुष्णी | 2. काबुल |
| C. सदानीरा | 3. रावी |
| D. शुतुद्री | 4. सतलज |

कूट :

| | A | B | C | D |
|---|---|---|---|---|
| (a) | 1 | 2 | 4 | 3 |
| (b) | 2 | 3 | 1 | 4 |
| (c) | 3 | 4 | 2 | 1 |
| (d) | 4 | 1 | 3 | 2 |

**U.P.P.C.S. (Pre) 2012**

**उत्तर—(b)**

विकल्प में दी गई वैदिक नदियां एवं उनके आधुनिक नामों का सुमेलन निम्नानुसार है—

| (वैदिक नदियां) | | (आधुनिक नाम) |
|---|---|---|
| कुभा | – | काबुल |
| परुष्णी | – | रावी |
| सदानीरा | – | गंडक |
| शुतुद्री या शतुद्रि | – | सतलज |

**33. महाभारत काल में महानदी का नाम था—**

(a) कावेरी (b) ताप्ती
(c) महानंदा (d) गंगा
(e) इनमें से कोई नहीं

**Chhattisgarh P.C.S. (Pre) 2016**

**उत्तर—(e)**

महाभारत काल में महानदी का नाम चित्रोत्पला था। महानदी का उल्लेख महाभारत के भीष्म पर्व में प्राप्त होता है।

**34. निम्नलिखित में से कौन-सी प्रथा उत्तर-वैदिक काल (Post vadic) में प्रचलित हुई?**

(a) धर्म - अर्थ - काम - मोक्ष
(b) ब्राह्मण - क्षत्रिय - वैश्य - शूद्र
(c) ब्रह्मचर्य - गृहस्थाश्रम - वानप्रस्थ - संन्यास
(d) इंद्र - सूर्य - रुद्र - मरुत

**I.A.S. (Pre) 1994**

**उत्तर—(a&c)**

चारों पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष) तथा आश्रम (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास) की अवधारणा का प्रारंभ उत्तर-वैदिक काल में हुआ था। वस्तुतः पुरुषार्थ का पूर्णरूपेण क्रियान्वयन आश्रमों के माध्यम से होता था। ये चारों पुरुषार्थ मानव जीवन के आधार स्तम्भ थे, जिनकी सफलता आश्रम पर निर्भर करती थी। ध्यातव्य है कि 'जाबालोपनिषद' में सर्वप्रथम चारों आश्रमों का उल्लेख प्राप्त होता है।

**35. "धर्म" तथा "ऋत" भारत की प्राचीन वैदिक सभ्यता के एक केंद्रीय विचार को चित्रित करते हैं। इस संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :**

1. धर्म व्यक्ति के दायित्वों एवं स्वयं तथा दूसरों के प्रति व्यक्तिगत कर्तव्यों की संकल्पना था।
2. ऋत मूलभूत नैतिक विधान था, जो सृष्टि और उसमें अंतर्निहित सारे तत्वों के क्रिया-कलापों को संचालित करता था।

उपर्युक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2



Scanned with OKEN Scanner

(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

I.A.S. (Pre) 2011

उत्तर–(c)

प्रश्नगत दोनों कथन भारत की प्राचीन वैदिक सभ्यता के संदर्भ में सही हैं। अतः सही उत्तर विकल्प (c) होगा। 'वरुण' देवता को वैदिक सभ्यता में 'नैतिक व्यवस्था' का प्रधान माना जाता था। इसी कारण उन्हें 'ऋतस्यगोपा' भी कहा जाता था।

**36. भारतीय संस्कृति के अंतर्गत 'ऋत' का अर्थ है-**

(a) प्राकृतिक नियम (b) कृत्रिम नियम

(c) मानवीय नियम (d) सामाजिक नियम

(e) इनमें से कोई नहीं

Chhattisgarh P.C.S. (Pre) 2016

उत्तर–(a)

ऋग्वेद में हमें धर्म के अतिरिक्त दूसरा शब्द ऋत मिलता है। सभी देवताओं का संबंध ऋत (विश्व की नैतिक एवं भौतिक व्यवस्था) से माना गया है। ऋग्वेद में इसका वर्णन है। सृष्टि के आदि में सर्वप्रथम ऋत की उत्पत्ति हुई थी। ऋत के द्वारा विश्व में सुव्यवस्था तथा प्रतिष्ठा स्थापित होती है। यह विश्व की व्यवस्था का नियामक है।

**37. निम्नलिखित वैदिक देवताओं में किसे उनका पुरोहित माना जाता था?**

(a) अग्नि (b) बृहस्पति

(c) द्यौस (d) इन्द्र

U.P.P.C.S. (Mains) 2013

उत्तर–(b)

बृहस्पति को वैदिक देवताओं का पुरोहित माना जाता था।

**38. निम्नलिखित में कौन-सी वह ब्रह्मवादिनी थी, जिसने कुछ वेद मंत्रों की रचना की थी?**

(a) लोपामुद्रा (b) गार्गी

(c) लीलावती (d) सावित्री

I.A.S. (Pre) 1995

उत्तर–(a)

वैदिक साहित्य में कई ऐसी विदुषी स्त्रियों का उल्लेख मिलता है, जिन्होंने वेद मंत्रों की रचना की थी। यथा–अपाला, घोषा, विश्ववारा, लोपामुद्रा आदि। लोपामुद्रा अगस्त्य ऋषि की पत्नी थीं।

**39. ऋग्वैदिक काल में निष्क शब्द का प्रयोग एक आभूषण के लिए होता था, किंतु परवर्ती काल में उसका प्रयोग इस अर्थ में हुआ–**

(a) शस्त्र (b) कृषि औजार

(c) लिपि (d) सिक्का

I.A.S. (Pre) 1993

उत्तर–(d)

वैदिक काल में सोने के हार को 'निष्क' कहा जाता था। किंतु परवर्ती काल में इसका प्रयोग विनिमय के माध्यम (सिक्कों) के रूप में किया जाने लगा।

**40. ऋग्वैदिक काल में निष्क किस अंग का आभूषण था?**

(a) कान का (b) गला का

(c) बाहु का (d) कलाई का

U.P.P.C.S. (Mains) 2007

उत्तर–(b)

ऋग्वैदिक काल में निष्क गले में पहना जाने वाला एक प्रकार का हार था। जिसे निष्क-ग्रीवा कहा जाता था। साथ ही निष्क, वैदिक काल में विनिमय का एक माध्यम भी था।

**41. प्राचीन भारत में 'निशाका' जाने जाते थे–**

(a) स्वर्ण आभूषण (b) गायें

(c) तांबे के सिक्के (d) चांदी के सिक्के

U.P.P.C.S. (Pre) 2005

उत्तर–(a)

प्राचीन भारत में 'निष्क' (Niska) या 'निशाका' मूल रूप से गले में पहना जाने वाला एक सोने का आभूषण था, जिसे 'निष्क-ग्रीवा' कहा जाता था। इसे पुरुषों तथा महिलाओं दोनों द्वारा सामान्यतः पहना जाता था। बाद में निश्चित वजन तथा मानक को अपनाने के कारण इसका प्रयोग विनिमय के माध्यम के रूप में किया जाने लगा।

**42. बोगजकोई महत्वपूर्ण है, क्योंकि–**

(a) यह मध्य एशिया एवं तिब्बत के मध्य एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र था।

(b) यहां से प्राप्त अभिलेखों में वैदिक देवताओं का नामोल्लेख प्राप्त होता है।

(c) वेद के मूल ग्रंथों की रचना यहां हुई थी।

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

U.P.P.C.S. (Pre) 1996

39th B.P.S.C. (Pre) 1994

उत्तर–(b)

एशिया माइनर स्थित बोगजकोई से चौदहवीं शताब्दी ई. पू. के अभिलेख में ऋग्वैदिक काल के देवताओं (इंद्र, वरुण, मित्र तथा नासत्य) का उल्लेख मिलता है। इससे ज्ञात होता है कि वैदिक आर्य ईरान से होकर ही भारत में आए होंगे।



Scanned with OKEN Scanner

43. निम्नलिखित अभिलेखों में से कौन-सा ईरान से भारत में आर्यों के आने की सूचना देता है?

(a) मानसेहरा (b) शहबाजगढ़ी

(c) बोगजकोई (d) जूनागढ़

**U.P.P.C.S. (Mains) 2009**

**उत्तर—(c)**

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

**44. 14वीं सदी ई.पू. का एक अभिलेख जिसमें वैदिक देवताओं का वर्णन है, प्राप्त हुआ है -**

(a) एकबटाना से (b) बोगजकोई से

(c) बेबीलोन से (d) बिसोटुन से

**U.P.P.C.S (Mains) 2016**

**उत्तर—(b)**

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

**45. निम्नलिखित में से किसने आर्यों के आदि देश के बारे में लिखा था?**

(a) शंकराचार्य (b) एनी बेसेंट

(c) विवेकानंद (d) बाल गंगाधर तिलक

**U.P.P.C.S. (Pre) 1996**

**उत्तर—(d)**

बाल गंगाधर तिलक ने आर्यों के आदि देश के बारे में लिखा था। तिलक ने यह मत व्यक्त किया था कि आर्यों का आदि देश उत्तरी ध्रुव था। किंतु तिलक का यह मत इतिहासकारों में मान्य नहीं है।

**46. जिस ग्रंथ में 'पुरुषमेध' का उल्लेख हुआ है, वह है—**

(a) कृष्ण यजुर्वेद (b) शुक्ल यजुर्वेद

(c) शतपथ ब्राह्मण (d) पंचविंश ब्राह्मण

**U.P. P.C.S. (Spl.) (Pre) 2008**

**उत्तर—(*)**

पुरुषमेध एक प्रमुख यज्ञ है। यह शुक्ल यजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मण तथा कृष्ण यजुर्वेद के तैत्तिरीय ब्राह्मण में वर्णित है। अतः प्रश्न के दिए गए विकल्पों में तीनों मौजूद होने के कारण कोई उत्तर नहीं दिया जा सकता। यद्यपि अनेक इतिहासकार केवल शतपथ ब्राह्मण की चर्चा करते समय उसमें पुरुषमेध यज्ञ की चर्चा करते हैं।

**47. शतपथ ब्राह्मण में उल्लिखित राजा विदेध माधव से संबंधित ऋषि थे—**

(a) ऋषि भारद्वाज (b) ऋषि वशिष्ठ

(c) ऋषि विश्वामित्र (d) ऋषि गौतम राहुगण

**U.P. Lower Sub. (Pre) 2015**

**उत्तर—(d)**

आर्यों के पूर्व दिशा की ओर प्रसार के विषय में शतपथ ब्राह्मण में वर्णित विदेध माधव की आख्यायिका उल्लेखनीय है। इसके अनुसार, राजा विदेध माधव, जो सरस्वती नदी के तट पर निवास करते थे, ने वैश्वानर अग्नि को मुख में धारण किया था। घृत का नाम लेते ही वह अग्नि मुख से निकलकर पृथ्वी पर आ गई तथा नदियों को जलाते हुए पूर्व की ओर बढ़ गई। विदेध माधव तथा उनके पुरोहित गौतम राहुगण ने उसका अनुगमन किया। किंतु उत्तरगिरि (हिमालय) से प्रवाहित होने वाली सदानीरा नदी को वह नहीं जला सका। विदेध माधव द्वारा अपने निवास स्थान के विषय में पूछे जाने पर अग्नि ने उनसे सदानीरा नदी के पूर्व की ओर रहने का आदेश दिया।

**48. उत्तर वैदिक काल में निम्नलिखित में से किनको आर्य संस्कृति का धुर समझा जाता था?**

(a) अंग, मगध (b) कोसल, विदेह

(c) कुरु, पांचाल (d) मत्स्य, शूरसेन

**U.P.P.C.S. (Mains) 2007**

**उत्तर—(c)**

उत्तर वैदिक काल में नगरीकरण की प्रक्रिया आरंभ हो चुकी थी। कुरु, पांचाल इस समय के प्रमुख नगर बन गए थे तथा ये नगर उत्तर वैदिक सभ्यता के मुख्य केंद्र या धुर (Hub) थे।

**49. गोत्र शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम हुआ था—**

(a) अथर्ववेद में (b) ऋग्वेद में

(c) सामवेद में (d) यजुर्वेद में

**U.P.P.C.S (Mains) 2005**

**उत्तर—(b)**

गोत्र शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद में हुआ था। गोत्र शब्द का मूल अर्थ है–'गोष्ठ' अथवा वह स्थान जहां समूचे कुल का गोधन पाला जाता था।

**50. पूर्व-वैदिक आर्यों का धर्म प्रमुखतः था—**

(a) भक्ति (b) मूर्ति पूजा और यज्ञ

(c) प्रकृति पूजा और यज्ञ (d) प्रकृति पूजा और भक्ति

**I.A.S. (Pre) 2012**

**उत्तर—(c)**

पूर्व वैदिक आर्यों का धर्म मुख्यतः प्रकृति पूजा और यज्ञ पर आधारित था।

**51. ऋग्वेद काल में जनता निम्न में से मुख्यतया किसमें विश्वास करती थी?**

(a) मूर्ति पूजा (b) एकेश्वरवाद



Scanned with OKEN Scanner

(c) देवी पूजा (d) बलि एवं कर्मकांड

**U.P.P.C.S. (Pre) 1993**

**उत्तर–(d)**

ऋग्वैदिक काल में लोग प्रकृति की शक्तियों-वैदिक देवता एवं देवियों की प्रार्थना, यज्ञ (जिसमें बलि और कर्मकांड निहित थे) में विश्वास करते थे।

**52. प्रसिद्ध दस राजाओं का युद्ध किस नदी के तट पर लड़ा गया?**

(a) गंगा (b) ब्रह्मपुत्र

(c) कावेरी (d) परुष्णी

**42nd B.P.S.C. (Pre) 1997**

**उत्तर–(d)**

दशराज्ञ युद्ध (दस राजाओं का युद्ध) परुष्णी नदी (आधुनिक रावी नदी) के तट पर लड़ा गया, जिसमें भरतों के राजा सुदास की विजय हुई।

**53. ऋग्वेद में उल्लिखित प्रसिद्ध 'दस-राजाओं' का युद्ध किस नदी के किनारे लड़ा गया था?**

(a) परुष्णी (b) सरस्वती

(c) विपाशा (d) अस्किनी

**U.P.P.C.S. (Mains) 2008**

**उत्तर–(a)**

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

**54. निम्न में से किस नदी को ऋग्वेद में 'मातेतमा' 'देवीतमा' एवं 'नदीतमा' संबोधित किया गया है?**

(a) सिंधु (b) सरस्वती

(c) वितस्ता (d) यमुना

**U.P.P.C.S. (Spl.) (Mains) 2008**

**उत्तर–(b)**

ऋग्वेद में सरस्वती को 'मातेतमा', 'देवीतमा' एवं 'नदीतमा' कहा गया है अर्थात सबसे अच्छी मां, सबसे अच्छी देवी तथा सबसे अच्छी नदी।

**55. उस जनजाति का नाम बतलाइए, जो ऋग्वैदिक आर्यों के पंचजन से संबंधित नहीं है–**

(a) यदु (b) पुरु

(c) तुर्वसु (d) किकट

**U.P.P.C.S. (Mains) 2009**

**उत्तर–(d)**

ऋग्वैदिक आर्यों के पंचजनों में यदु, द्रुह्यु, पुरु, अनु, तुर्वसु शामिल थे। किकट इनसे संबंधित नहीं है।

**56. प्राचीन काल में आर्यों के जीविकोपार्जन का मुख्य साधन था–**

(a) कृषि (b) शिकार

(c) शिल्पकर्म (d) व्यापार

**U.P.P.C.S. (Pre) 1993**

**उत्तर–(a)**

आर्य संस्कृति मूलतः पशुपालक और कृषक संस्कृति रही है। ऋग्वेद में कई मंत्रों में कृषि तथा उसके कार्यकलापों का वर्णन है। अच्छी कृषि के लिए वर्षा की कामना की गई है तथा पशुओं को चराने और पालने का अनेक स्थलों पर वर्णन है। उत्तर वैदिक काल तो कृषि प्रधान संस्कृति ही था।

**57. ऋग्वेद में उल्लिखित 'यव' शब्द किस कृषि उत्पाद हेतु प्रयुक्त किया गया है?**

(a) जौ (b) चना

(c) चावल (d) गेहूं

**U.P.P.C.S. (Spl.) (Mains) 2008**

**उत्तर–(a)**

ऋग्वेद में उल्लिखित 'यव' शब्द का जौ से तादात्म्य स्थापित किया गया है।

**58. सूची-I एवं सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए–**

| सूची-I | सूची-II |
|---|---|
| (A) व्रीही | (i) गन्ना |
| (B) मुद्ग | (ii) चावल |
| (C) यव | (iii) मूंग |
| (D) इक्षु | (iv) जौ |

**कूट :**

(a) A-(i), B-(ii), C-(iii), D-(iv)

(b) A-(iv), B-(iii), C-(ii), D-(i)

(c) A-(iii), B-(iv), C-(i), D-(ii)

(d) A-(ii), B-(iii), C-(iv), D-(i)

**R.AS./R.T.S (Pre) 2021**

**उत्तर–(d)**

सही सुमेलन इस प्रकार है–

| सूची-I | सूची-II |
|---|---|
| व्रीही | चावल |
| मुद्ग | मूंग |
| यव | जौ |
| इक्षु | गन्ना |

**59. ऋग्वैदिक 'पणि' किस वर्ग के नागरिक थे?**

(a) पुरोहित (b) लोहार

(c) स्वर्णकार (d) व्यापारी

**M.P.P.C.S. (Pre) 2019**

**उत्तर–(d)**



Scanned with OKEN Scanner

व्यापार-वाणिज्य प्रधानतः 'पणि' लोग करते थे। ऋग्वेद में 'पणि' शब्द का उल्लेख कई स्थानों पर हुआ है। पणि ऋण देते थे तथा ब्याज बहुत अधिक लेते थे। उन्हें 'वेकनाट' (सूदखोर) कहा गया है।

**60. वैदिक युग में प्रचलित लोकप्रिय शासन प्रणाली थी–**

(a) निरंकुश  (b) प्रजातंत्र
(c) गणतंत्र  (d) वंश परंपरागत राजतंत्र

**R.A.S./R.T.S. (Pre) 1993**

**उत्तर–(d)**

वैदिक काल में प्रचलित लोकप्रिय शासन प्रणाली वंश परंपरागत राजतंत्र प्रणाली थी। यद्यपि जनता द्वारा चुनाव के भी कुछ उदाहरण मिलते हैं।

**61. वैदिकयुगीन सभा–**

(a) गांवों के व्यावसायिक लोगों की संस्था थी
(b) राज-दरबार होता था
(c) मंत्रिपरिषद थी
(d) राज्य के समस्त लोगों की एक राष्ट्रीय सभा थी

**R.A.S./R.T.S. (Pre) 1994**

**उत्तर–(c)**

वैदिक काल में सभा एवं समिति नामक दो संस्थाएं राजा की निरंकुशता पर नियंत्रण रखती थीं। संभवतः सभा कुलीन या वृद्ध मनुष्यों की संस्था थी, जिसमें उच्च कुल में उत्पन्न व्यक्ति ही भाग ले सकते थे।

**62. किस वेद में सभा और समिति को प्रजापति की दो पुत्रियां कहा गया है?**

(a) ऋग्वेद  (b) सामवेद
(c) यजुर्वेद  (d) अथर्ववेद

**U.P.P.C.S. (Mains) 2009**

**उत्तर–(d)**

अथर्ववेद में सभा और समिति को प्रजापति की दो पुत्रियां कहा गया है।

**63. ऋग्वैदिक जन सभा जो न्यायिक कार्यों से संबंधित थी-**

(a) सभा  (b) समिति
(c) विधाता  (d) उपर्युक्त में से सभी

**Jharkhand P.C.S. (Pre) 2016**

**उत्तर–(a)**

सभा, समिति एवं विदथ ऋग्वैदिक कालीन जनतांत्रिक संस्थाएं थीं। इन संस्थाओं में सभा न्यायिक कार्यों से संबंधित थी। ऋग्वेद में सभा का आठ बार उल्लेख हुआ है।

**64. 'आयुर्वेद' अर्थात 'जीवन का विज्ञान' का उल्लेख सर्वप्रथम मिलता है–**

(a) आरण्यक में  (b) सामवेद में
(c) यजुर्वेद में  (d) अथर्ववेद में

**U.P.P.C.S. (Pre) 1994**

**उत्तर–(d)**

अथर्ववेद में सामान्य मनुष्यों के विचारों तथा अंधविश्वासों का विवरण मिलता है। इसमें विविध विषयों यथा–रोग-निवारण, समन्वय, राजभक्ति, विवाह तथा प्रणय गीतों आदि के विवरण गुम्फित हैं।

**65. ऋग्वैदिक धर्म था–**

(a) बहुदेववादी  (b) एकेश्वरवादी
(c) अद्वैतवादी  (d) निवृत्तमार्गी

**U.P.P.C.S. (Mains) 2014**

**उत्तर–(a)**

ऋग्वेद में हमें प्रथम दृष्टया बहुदेववाद (Polytheism) के दर्शन होते हैं। आर्य विभिन्न देवताओं के अस्तित्व में विश्वास करते थे। मुख्यतः वैदिक देवताओं के तीन वर्ग हैं– 1. द्युस्थान (आकाश) के देवता, 2. अंतरिक्ष के देवता तथा 3. पृथ्वी के देवता। इन देवताओं की स्तुति करते समय वैदिक ऋषि जब जिस देवता की स्तुति करते हैं, उसे ही प्रमुख या सर्वश्रेष्ठ देवता कहते हैं। इसे एकैक्यवाद भी कहा जाता है। इसके अलावा ऋग्वेद में ''एकम् सत् विप्रा बहुधा वदन्ति'' कहकर एकेश्वरवाद का भी समर्थन किया गया है। ऋग्वेद में आर्यों के प्रधान देवता प्राकृतिक शक्तियों के प्रतिनिधि थे, जिनका मानवीकरण किया गया था।

**66. सर्वाधिक ऋग्वैदिक सूक्त समर्पित हैं–**

(a) अग्नि को  (b) इंद्र को
(c) रुद्र को  (d) विष्णु को

**U.P.P.C.S. (Mains) 2002**

**उत्तर–(b)**

ऋग्वेद में इंद्र का वर्णन सर्वाधिक प्रतापी देवता के रूप में किया गया है, जिसे 250 सूक्त समर्पित हैं। यह ऋग्वैदिक काल में सर्वाधिक लोकप्रिय देवता थे। इंद्र को आर्यों का युद्ध नेता तथा वर्षा का देवता माना जाता है। ऋग्वेद में अग्नि को 200 सूक्त समर्पित हैं और वह इस काल के दूसरे सर्वाधिक महत्वपूर्ण देवता हैं।

**67. निम्नलिखित में से किसे ऋग्वेद में युद्ध-देवता समझा जाता है?**

(a) अग्नि  (b) इंद्र
(c) सूर्य  (d) वरुण

**U.P.P.C.S. (Mains) 2011**

**उत्तर–(b)**

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

**68. ऋग्वेद में सर्वाधिक संख्या में मंत्र संबंधित हैं–**

(a) अग्नि से  (b) वरुण से
(c) विष्णु से  (d) यम से

**U.P.P.C.S. (Mains) 2010**

**उत्तर–(a)**



Scanned with OKEN Scanner

ऋग्वेद में सर्वाधिक संख्या में मंत्र इंद्र को समर्पित हैं, किंतु वह इस प्रश्न के विकल्प में नहीं है। दूसरे स्थान पर अग्नि को 200 सूक्त समर्पित हैं। अतः सही उत्तर विकल्प (a) है।

**69. ऋग्वेद के सर्वाधिक मंत्र किस वैदिक देवता को समर्पित हैं?**

(a) अग्नि (b) इंद्र
(c) वरुण (d) आदित्य

**Uttarakhand P.C.S. (Pre) 2021**

**उत्तर—(b)**

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

**70. वैदिक देवता इंद्र के विषय में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए–**

**1. झंझावत के देवता थे।**
**2. पापियों को दंड देते थे।**
**3. नैतिक व्यवस्था के संरक्षक थे।**
**4. वर्षा के देवता थे।**

**कूट :**

(a) 1 एवं 2 सही हैं। (b) 1 एवं 3 सही हैं।
(c) 2 एवं 4 सही हैं। (d) 1 एवं 4 सही हैं।

**U.P.P.C.S. (Mains) 2017**

**उत्तर—(d)**

ऋग्वेद में इंद्र का वर्णन सर्वाधिक प्रतापी देवता के रूप में किया जाता है, जिसे 250 सूक्त समर्पित हैं। यह ऋग्वैदिक काल में सर्वाधिक लोकप्रिय देवता थे। इंद्र को आर्यों का युद्ध नेता तथा वर्षा, आंधी, तूफान का देवता माना जाता है। इंद्र को वृत्तासुरहंता (वृत्तासुर नामक राक्षस का वध करने वाला), पुरभिद (किला को भेदने वाला), सोमापा (सोम का अत्यधिक पान करने वाला), शतक्रति (एक सौ शक्तियों का स्वामी) आदि नामों से जाना जाता है। नैतिक व्यवस्था का संरक्षक वरुण को कहा गया है। इसके अतिरिक्त कुछ मंत्रों में पापियों को दंड देने के लिए इंद्र और सोम से प्रार्थना की गई है। इससे स्पष्ट होता है कि इंद्र पापियों को दंड भी देते थे। प्रश्न विकल्प में कथन 1, 2, 4 न होने के कारण विकल्प (d) 1 एवं 4 ज्यादा उपयुक्त उत्तर है।

**71. निम्नलिखित में से पूर्व वैदिक आर्यों का सर्वाधिक लोकप्रिय देवता कौन था?**

(a) वरुण (b) विष्णु
(c) रुद्र (d) इंद्र

**U.P.P.C.S. (Mains) 2008**

**उत्तर—(d)**

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

**72. वैदिक देवमंडल में निम्न में से कौन देवता युद्ध का देवता माना जाता है?**

(a) वरुण (b) इंद्र
(c) मित्र (d) अग्नि

**Uttarakhand P.C.S. (Pre) 2016**

**उत्तर—(b)**

ऋग्वैदिक आर्यों के सबसे महत्वपूर्ण एवं प्रतापी देवता इंद्र थे। इन्हें ऋग्वेद में विभिन्न नामों से पुकारा गया है। इन्हें पुरंदर अर्थात किलों को तोड़ने वाला कहा गया है। यह युद्ध के नेता के रूप में चित्रित हैं। इंद्र को वृत्तासुर हंता (वृत्तासुर नामक राक्षस का वध करने वाला), पुरभिद (दुर्ग या किला को भेदने वाला), सोमापा (सोम का अत्यधिक पान करने वाला), शतक्रति (एक सौ शक्तियों का स्वामी), आदि नामों से जाना जाता है।

**73. 800 से 600 ईसा पूर्व का काल किस युग से जुड़ा है?**

(a) ब्राह्मण युग
(b) सूत्र युग
(c) रामायण युग
(d) महाभारत युग

**U.P.P.C.S. (Pre) 2002**

**उत्तर—(a)**

800 से 600 ईसा पूर्व का काल ब्राह्मण ग्रंथों के प्रणयन युग से जुड़ा है। प्रायः सातवीं या छठी शताब्दी ई. पू. से लेकर तीसरी शताब्दी ई. पू. तक का समय सूत्र काल कहा जाता है।

**74. गायत्री मंत्र किस पुस्तक में मिलता है?**

(a) उपनिषद (b) भगवद्गीता
(c) ऋग्वेद (d) यजुर्वेद

**39th B.P.S.C. (Pre) 1994**

**उत्तर—(c)**

'गायत्री मंत्र' ऋग्वेद में उल्लिखित है। इसके रचनाकार विश्वामित्र हैं। यह सवितृ (सूर्य देवता) को समर्पित है। यह मंत्र ऋग्वेद के तृतीय मंडल में वर्णित है।

**75. गायत्री मंत्र के नाम से प्रसिद्ध मंत्र सर्वप्रथम किस ग्रंथ में मिलता है?**

(a) भगवद्गीता (b) अथर्ववेद
(c) ऋग्वेद (d) मनुस्मृति

**U.P. P.C.S. (Pre) 2013**

**उत्तर—(c)**

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।



Scanned with OKEN Scanner

76. गायत्री मंत्र की रचना किसने की थी?

(a) वशिष्ठ (b) विश्वामित्र

(c) इंद्र (d) परीक्षित

Uttarakhand P.C.S. (Pre) 2006

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

77. सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर और वंशानुचरित संकेतक है—

(a) वेदों के (b) पुराणों के

(c) उपनिषदों के (d) सूत्रों के

U.P. P.C.S. (Pre) (Re-Exam) 2015

उत्तर—(b)

पुराणों में पांच प्रकार के विषयों का वर्णन सिद्धांततः इस प्रकार है – सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर तथा वंशानुचरित। सर्ग बीज या आदि सृष्टि का पुराण है। प्रतिसर्ग प्रलय के बाद की पुनर्सृष्टि को कहते हैं। वंश में देवताओं या ऋषियों के वंश वृक्षों का वर्णन है। मन्वन्तर में कल्प के महायुगों का वर्णन है और वंशानुचरित पुराणों के वे अंग हैं, जिनमें राजवंशों की तालिकाएं दी हुई हैं और राजनीतिक अवस्थाओं, कथाओं तथा घटनाओं के वर्णन हैं।

78. पुराणों की संख्या है—

(a) 16 (b) 18

(c) 19 (d) 21

U.P.P.S.C. (GIC) 2010

U.P.P.C.S. (Pre) 2009

उत्तर—(b)

पुराणों की संख्या 18 है। इनकी रचना लोमहर्ष ऋषि तथा उनके पुत्र उग्रश्रवा द्वारा की गई थी।

79. 'श्रीमद्भागवद्गीता' मौलिक रूप में किस भाषा में लिखी गई थी?

(a) संस्कृत (b) उर्दू

(c) पालि (d) हिंदी

Uttarakhand U.D.A./L.D.A. (Pre) 2007

उत्तर—(a)

'श्रीमद्भागवद्गीता' मौलिक रूप से संस्कृत भाषा में लिखी गई थी। यह प्राचीन धार्मिक ग्रंथ 'महाभारत' का एक भाग है।

80. महाभारत मूलतः किस रूप में जानी जाती थी?

(a) वृहत्कथा (b) ब्राह्मण

(c) वृहत्संहिता (d) जयसंहिता

U.P.R.O./A.R.O. (Pre) 2014

उत्तर—(d)

महाभारत के प्रारंभिक रचना काल में 8,800 श्लोक थे और इसे 'जयसंहिता' के नाम से जाना जाता था। महाभारत का दूसरा संस्करण 'भारत' था, जिसमें श्लोकों की संख्या 24,000 थी। वर्तमान महाभारत में एक लाख श्लोक प्राप्त हैं। यह इसका अंतिम संस्करण है, जिसे 'शतसाहस्त्री संहिता' या 'महाभारत' कहा गया।

81. शतसाहस्त्री-संहिता उपनाम निम्नलिखित में से किस ग्रंथ का है?

(a) ऋग्वेद (b) अथर्ववेद

(c) रामायण (d) महाभारत

U.P.B.E.O. (Pre) 2019

उत्तर-(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

82. हिंदू पौराणिक कथा के अनुसार, समुद्र मंथन हेतु किस सर्प ने रस्सी के रूप में स्वयं को प्रस्तुत किया?

(a) कालिया (b) वासुकी

(c) पुष्कर (d) शेषनाग

Uttarakhand U.D.A./L.D.A. (Pre) 2007

उत्तर—(b)

हिंदू पौराणिक कथा के अनुसार, समुद्र मंथन हेतु मथानी के रूप में मंद्राचल पर्वत तथा रस्सी के रूप में सर्पों के राजा वासुकी का प्रयोग किया गया था।

83. किस काल में अछूत की अवधारणा स्पष्ट रूप से उद्भूत हुई थी?

(a) ऋग्वैदिक काल में (b) उत्तर वैदिक काल में

(c) उत्तर-गुप्त काल में (d) धर्मशास्त्र के समय में

39th B.P.S.C. (Pre) 1994

उत्तर—(d)

धर्मशास्त्रों के समय में (सूत्र काल में) चार वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र) के अतिरिक्त समाज में अन्य अनेक जातियों यथा—अम्बष्ठ, उग्र, निषाद, मागध, वैदेहक, रथकार आदि का आविर्भाव अनुलोम एवं प्रतिलोम विवाहों के फलस्वरूप हो गया। पाणिनि ने दो प्रकार के शूद्रों का उल्लेख किया है—निरवसित एवं अनिरवसित। इनमें पहले प्रकार के शूद्र ही अस्पृश्य माने जाते थे।

84. 'सत्यमेव जयते' शब्द किस उपनिषद से लिए गए हैं?

(a) मुंडकोपनिषद (b) कठोपनिषद

(c) छांदोग्योपनिषद (d) इनमें से कोई नहीं

U.P.P.C.S. (Spl.) (Pre) 2004

U.P.P.C.S. (Mains) 2004

उत्तर—(a)

'सत्यमेव जयते' शब्द मुंडकोपनिषद से लिया गया है, जिसका अर्थ है—'सत्य की ही विजय होती है।' यह भारत के राजचिह्न पर भी अंकित है।



Scanned with OKEN Scanner

**85. 'सत्यमेव जयते' शब्द कहां से लिया गया है?**

(a) मनुस्मृति (b) भगवद्गीता
(c) ऋग्वेद (d) मुंडक उपनिषद

**U.P.P.C.S. (Pre) 1991**
**M.P. P.C.S. (Pre) 1992, 1994**
**I.A.S. (Pre) 2014**

**उत्तर–(d)**

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

**86. भारतीय प्रतीक पर उत्कीर्ण 'सत्यमेव जयते' लिया गया है-**

(a) ऋग्वेद से (b) भगवद्गीता से
(c) मुंडकोपनिषद से (d) मत्स्यपुराण से

**U.P.P.S.C. (R.I.) 2014**

**उत्तर–(c)**

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

**87. 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' कथन है, मूलतः**

(a) उपनिषदों का (b) महाकाव्यों का
(c) पुराणों का (d) षड्दर्शन का
(e) इनमें से कोई नहीं

**Chhattisgarh P.C.S. (Pre) 2016**

**उत्तर–(a)**

'तमसो मा ज्योतिर्गमय' कथन बृहदारण्यक उपनिषद से लिया गया है। इस कथन का अर्थ है- 'अंधकार से प्रकाश की ओर'।

**88. किस उपनिषद का शाब्दिक अर्थ सफेद घोड़ा है?**

(a) कठोपनिषद (b) छांदोग्य उपनिषद
(c) तैत्तरीय उपनिषद (d) ईशोपनिषद
(e) इनमें से कोई नहीं

**Chhattisgarh P.C.S. (Pre) 2016**

**उत्तर–(e)**

विकल्प में दिए गए किसी उपनिषद का तात्पर्य सफेद घोड़ा नहीं है। श्वेताश्वतर उपनिषद का अर्थ 'सफेद घोड़ों द्वारा खीचा गया' (Drawn by white Steeds) है।

**89. सत्यकाम जाबाल की कथा, जो अनब्याही मां होने के लांछन को चुनौती देती है, उल्लेखित है–**

(a) जाबाल उपनिषद (b) प्रश्नोपनिषद
(c) छांदोग्य उपनिषद (d) कठोपनिषद

**R.A.S./R.T.S (Pre) 2016**

**उत्तर–(c)**

सत्यकाम जाबाल महर्षि गौतम के शिष्य थे, जिनकी माता का नाम जाबाला था। सत्यकाम जाबाल की कथा जो अनब्याही मां होने के लांछन को चुनौती देती है, इनकी कथा छांदोग्य उपनिषद में उल्लेखित है।

**90. ऋग्वेद की मूल लिपि थी–**

(a) देवनागरी (b) खरोष्ठी
(c) पालि (d) ब्राह्मी

**U.P.P.C.S. (Spl.) (Pre) 2004**

**उत्तर–(d)**

ऋग्वेद की मूल लिपि ब्राह्मी थी। ऋग्वेद में कुल 10 मंडल हैं तथा 1028 सूक्त हैं। ऋग्वेद के पुरोहित को 'होता' कहा जाता था।

**91. वैदिक कर्मकांड में 'होता' का संबंध है -**

(a) ऋग्वेद से (b) यजुर्वेद से
(c) सामवेद से (d) अथर्ववेद से

**U.P.R.O./A.R.O. (Mains) 2013**

**उत्तर–(a)**

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

**92. अवेस्ता और ऋग्वेद में समानता है। अवेस्ता किस क्षेत्र से संबंधित है?**

(a) भारत से (b) ईरान से
(c) इस्राइल से (d) मिस्र से

**U.P. Lower Sub. (Spl.) (Pre) 2004**

**उत्तर–(b)**

अवेस्ता और ऋग्वेद दोनों में कुछ भाषिक समानता हैं। अवेस्ता ईरान के क्षेत्र से संबंधित है, जबकि ऋग्वेद का संबंध आर्यों से हैं।

**93. वैदिक काल में किस जानवर को "अघन्या" माना गया है?**

(a) बैल (b) भेड़
(c) गाय (d) हाथी

**U.P.P.C.S. (Pre) 2008**

**उत्तर–(c)**

वैदिक काल में गाय को 'अघन्या' (न मारे जाने योग्य) माना गया है। गाय की हत्या अथवा उसे घायल करने वाले व्यक्ति को मृत्युदंड तथा देश निकाला की व्यवस्था वेदों में दी गई है।

**94. ऋग्वेद में अघन्या का प्रयोग हुआ है–**

(a) बकरी के लिए (b) गाय के लिए
(c) हाथी के लिए (d) घोड़े के लिए

**U.P. U.D.A./L.D.A. (Spl.) (Pre) 2010**

**उत्तर–(b)**

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

**95. ऋग्वेद में कई परिच्छेदों में प्रयुक्त 'अघन्य' शब्द संदर्भित है-**

(a) पुजारी के लिए (b) स्त्री के लिए
(c) गाय के लिए (d) ब्राह्मण के लिए

**U.P.P.C.S. (Pre) 2017**

**उत्तर–(c)**



Scanned with OKEN Scanner

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

96. ऋग्वेद-कालीन आर्यों और सिंधु घाटी के लोगों की संस्कृति के बीच अंतर के संबंध में, निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

1. ऋग्वेद-कालीन आर्य कवच और शिरस्त्राण (हेलमेट) का उपयोग करते थे, जबकि सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों में इनके उपयोग का कोई साक्ष्य नहीं मिलता।
2. ऋग्वेद-कालीन आर्यों को स्वर्ण, चांदी और ताम्र का ज्ञान था, जबकि सिंधु घाटी के लोगों को केवल ताम्र और लौह का ज्ञान था।
3. ऋग्वेद-कालीन आर्यों ने घोड़े को पालतू बना लिया था, जबकि इस बात का कोई साक्ष्य नहीं है कि सिंधु घाटी के लोग इस पशु को जानते थे।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए-

(a) केवल 1 (b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

**I.A.S. (Pre) 2017**

उत्तर—(a)

ऋग्वेद में कवच (वर्म) का उल्लेख है तथा संभवतः ऋग्वेद-कालीन आर्य लौह एवं स्वर्ण से निर्मित कवच और शिरस्त्राण (हेलमेट) का प्रयोग करते थे। जबकि सैंधव सभ्यता के लोगों में इसके उपयोग का कोई साक्ष्य प्राप्त नहीं होता। सिंधु सभ्यता के स्थलों के उत्खनन से प्राप्त युद्ध संबंधी उपकरण अत्यंत साधारण कोटि के हैं, जो इस बात की ओर संकेत करते हैं कि उन्होंने भौतिक सुख-सुविधाओं की ओर ही विशेष ध्यान दिया था। ऋग्वेद-कालीन आर्यों को स्वर्ण, चांदी और ताम्र का ज्ञान था। सिंधु कालीन लोगों को केवल ताम्र एवं कांसे का ही ज्ञान था। लोहे का प्रचलन उत्तर भारत में 1000 ई.पू.- 600 ई.पू. के मध्य हुआ था। अतः कथन (2) गलत है। ऋग्वैदिक-कालीन आर्यों ने घोड़े को पालतू बना लिया था, जिसकी सहायता से वे युद्धों में विजय प्राप्त करते थे। सिंधु सभ्यता के विभिन्न स्थलों में भी घोड़े के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। अतः कथन (3) भी गलत है। इस प्रकार कथन (1) ही सही है। अतः सही उत्तर विकल्प (a) होगा।

97. ऋग्वैदिक काल के प्रारंभ में निम्न में से किसे महत्वपूर्ण मूल्यवान संपत्ति समझा जाता था?

(a) भूमि को (b) गाय को
(c) स्त्रियों को (d) जल को

**U.P. P.C.S. (Pre) (Re-Exam) 2015**

उत्तर—(b)

ऋग्वैदिक काल के प्रारंभ में गाय को महत्वपूर्ण संपत्ति समझा जाता था। इस काल में गायें मुख्यतः विनिमय का माध्यम होती थीं। ऋग्वेद के कुछ सूक्तों में गाय को देवता के रूप में कल्पित किया गया है।

98. सूची - I को सूची - II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए :

| सूची - I | सूची - II |
|---|---|
| A. सिंधु घाटी सभ्यता | 1. चारागाह |
| B. उत्तर वैदिक समाज | 2. जमींदारी |
| C. ऋग्वैदिक समाज | 3. कृषक |
| D. मध्य काल | 4. नगरीय |

कूट :

| | A | B | C | D |
|---|---|---|---|---|
| (a) | 4 | 2 | 3 | 1 |
| (b) | 2 | 1 | 4 | 3 |
| (c) | 3 | 4 | 1 | 2 |
| (d) | 4 | 3 | 1 | 2 |

**U.P.P.C.S. (Pre) 2020**

उत्तर—(d)

सूची - I का सूची - II से सही सुमेलन है-

| सूची - I | सूची - II |
|---|---|
| सिंधु घाटी सभ्यता | नगरीय |
| उत्तर वैदिक समाज | कृषक |
| ऋग्वैदिक समाज | चारागाह |
| मध्य काल | जमींदारी |

99. प्राचीन भारतीय समाज के प्रसंग में, निम्नलिखित शब्दों में से कौन-सा शब्द शेष तीन के वर्ग का नहीं है?

(a) कुल (b) वंश
(c) कोश (d) गोत्र

**I.A.S. (Pre) 1996**

उत्तर—(c)

प्राचीन भारतीय समाज के संदर्भ में कुल, वंश तथा गोत्र परिवार से संबंधित हैं, जबकि कोश परिवार से संबंधित न होकर भंडार से संबंधित है।

100. संस्कारों की कुल संख्या कितनी है?

(a) 10 (b) 12
(c) 15 (d) 16

**M.P. P.C.S. (Pre) 2015**

उत्तर—(d)



Scanned with OKEN Scanner

'संस्कार' का शाब्दिक अर्थ है–परिष्कार, शुद्धता अथवा पवित्रता। गौतम धर्मसूत्र में इसकी संख्या चालीस (40) मिलती है। मनु ने गर्भाधान से मृत्यु-पर्यंत तेरह संस्कारों का उल्लेख किया है। बाद की स्मृतियों में इनकी संख्या सोलह (16) स्वीकार किया गया। आज यही सर्वप्रचलित है।

**101. जीविकोपार्जन हेतु 'वेद-वेदांग' पढ़ाने वाला अध्यापक कहलाता था–**

(a) आचार्य (b) अध्वर्यु

(c) उपाध्याय (d) पुरोहित

**Uttarakhand U.D.A./L.D.A. (Mains) 2007**

**उत्तर–(c)**

वैदिक काल में जीविकोपार्जन हेतु 'वेद-वेदांग' पढ़ाने वाला अध्यापक उपाध्याय कहलाता था। आचार्य गुरुकुल की स्थापना करके अपने शिष्यों को पढ़ाता था तथा कोई फीस नहीं लेता था, किंतु शिष्य के द्वारा दी गई दक्षिणा स्वीकार कर लेता था।

Scanned with OKEN Scanner